

पाठ - 1

बड़े भाई साहब

~ प्रेमचंद

प्रश्न उत्तर

मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक से दो पंक्तियों में दीजिए:

1. कथा नायक की रुचि किन कार्यों में थी?

उत्तर: कथा नायक की रुचि सिर्फ खेलकूद और ऊधम मचाने और उछलकूद करने में थी।

2. बड़े भाई साहब छोटे से हर समय पहला सवाल क्या पूछते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे के कहीं से लौटने पर हमेशा पूछते, “कहाँ थे?”

3. दूसरी बार पास होने के बाद छोटे के व्यवहार में क्या परिवर्तन आया?

उत्तर: दूसरी बार पास होने के बाद छोटा भाई घमंडी हो गया लेकिन उसके मन में बड़े भाई के लिए इज्जत बढ़ गई थी।

4. बड़े भाई साहब छोटे से उम्र में कितने बड़े थे और वे किस कक्षा में पढ़ते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे भाई से उम्र में पाँच साल बड़े थे और वे नौवीं कक्षा में पढ़ते थे।

5. बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए क्या करते थे?

उत्तर: बड़े भाई साहब दिमाग को आराम देने के लिए किताब के हाशियों पर कुछ तस्वीरें खींचा करते थे और कभी शब्दों के अजीबोगरीब मेल बनाया करते थे और एक शब्द या वाक्य दस-बीस बार लिखा करते थे ।

लिखित

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 25-30 शब्दों में दीजिए:

1. छोटे भाई ने अपनी पढ़ाई के लिए टाइम टेबल बनाते समय क्या-क्या सोचा और फिर उसका पालन क्यों नहीं कर पाया?

उत्तर: छोटे भाई ने टाइम टेबल बनाते हुए सोचा कि अब वह पढ़ाई के प्रति गंभीर हो जाएगा । इसके लिए उसने हर विषय को उपयुक्त समय देने की योजना बनाई । लेकिन खेलकूद की लालसा के कारण वह टाइम टेबल का पालन नहीं कर पाया ।

2. एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उनकी क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर: एक दिन जब गुल्ली-डंडा खेलने के बाद छोटा भाई बड़े भाई साहब के सामने पहुँचा तो उन्होंने पहले उसे खूब डांटा-फटकारा और फिर उसे घमंड न करने की सलाह दी । साथ-ही-साथ उन्होंने यह भी बताया कि अंग्रेजी बहुत ही कठिन है और छोटे भाई को समझाया कि कैसे कड़ी मेहनत ही लगातार सफलता दिला सकती है।

बड़े भाई ये नहीं चाहते थे कि सफलता के नशे में छोटा भाई अपना समय बर्बाद कर दे।

3. बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ क्यों दबानी पड़ती थीं?

उत्तर: बड़े भाई और अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास होने के कारण बड़े भाई साहब को अपने मन की इच्छाएँ दबानी पड़ती थीं | बड़े भाई साहब ऐसा कोई काम नहीं करना चाहते थे जिससे छोटे भाई को गलत सीख मिले। वह अपने छोटे भाई के लिए सही व्यवहार की मिसाल रखना चाहते थे। घर से बाहर रहते हुए वे ही छोटे भाई के अभिभावक और सच्चे मित्र थे।

4. बड़े भाई साहब छोटे भाई को क्या सलाह देते थे और क्यों?

उत्तर: बड़े भाई साहब छोटे भाई को समय का सदुपयोग करने की सलाह देते थे। वे ये नहीं चाहते थे कि छोटा भाई अपने मुख्य उद्देश्य से भटक जाए।

बड़े भाई साहब ऐसा इसलिए करते थे क्योंकि वे बड़े थे और वे अपने छोटे भाई की भलाई चाहते थे |

5. छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार का क्या फायदा उठाया?

उत्तर: छोटे भाई ने बड़े भाई साहब के नरम व्यवहार को देखकर उनका फायदा उठाना शुरू कर दिया। छोटे भाई स्वयं को स्वतंत्र महसूस करने लगा था | उसके मन में बड़े भाई साहब के प्रति सम्मान कम हो गया था इसलिए उसने खेलकूद में ज्यादा समय लगाना शुरू कर दिया और पढ़ना कम कर दिया। वह जो भी शरारत करता था, अपने बड़े भाई की नजर बचाकर ही करता था।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिए:

1. बड़े भाई की डाँट-फटकार अगर न मिलती तो क्या छोटा भाई अपनी कक्षा में अक्ल आता? अपने विचार प्रकट कीजिए।

उत्तर: हालाँकि छोटा भाई मेधावी, तीव्र बुद्धि वाला था और थोड़े समय में ही अपनी पढ़ाई पूरी कर लेता था लेकिन बड़ों की नसीहत हर किसी के लिए जरूरी होती है। यदि उसे बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार न मिलती तो वह पास तो अवश्य हो जाता परंतु कक्षा में अक्ल नहीं आ पाता। बड़े भाई साहब की डाँट-फटकार कहीं न कहीं उसे रास्ते से विचलित नहीं होने देती थी।

2. बड़े भाई साहब पाठ में लेखक ने समूची शिक्षा के किन तौर तरीके पर व्यंग्य किया है? क्या आप उनके विचार से सहमत हैं?

उत्तर: प्रस्तुत पाठ में लेखक प्रेमचंद ने समूची शिक्षा की रटत प्रणाली पर तीखा व्यंग्य किया है।

शिक्षा पद्धति का सबसे बड़ा दोष है कि छात्रों से किताबी बातें कंठस्थ करने की उम्मीद की जाती है। इसमें कहीं न कहीं मौलिक विचारों को दबाया जाता है। कुछ बातें जानना जरूरी है, लेकिन क्यों जरूरी है यह बात छात्रों को नहीं बताई जाती है। लेखक ने किताबी ज्ञान से अधिक महत्व अनुभव से मिलने वाले ज्ञान को दिया है। उनके अनुसार छात्रों के लिए अध्यापकों को अपने पढ़ाने की शैली में बदलाव की आवश्यकता है।

हाँ, मैं उनके इस तर्क से पूरी तरह सहमत हूँ कि किताबी ज्ञान प्राप्त करके कोई भी जिंदगी की दौड़ में पूरी तरह से सफल नहीं हो सकता।

3. बड़े भाई साहब के अनुसार जीवन की समझ कैसे आती है?

उत्तर: बड़े भाई साहब के अनुसार किताबी ज्ञान जीवन की समझ पाने के लिए काफी नहीं है। जीवन के अच्छे और बुरे अनुभवों से ही हम जीवन को समझ पाते हैं। बड़े भाई ने अपने बुजुर्गों को गौर से देखा और समझा है। बड़े भाई साहब के अनुसार वे कम पढ़े-लिखे हैं परंतु उन्हें जिंदगी की ज़्यादा समझ है। वे उनके व्यावहारिक ज्ञान से बहुत प्रभावित हैं क्योंकि व्यावहारिक ज्ञान एक तरह से किताबी ज्ञान के पूरक की तरह काम करता है।

4. छोटे भाई के मन में बड़े भाई के प्रति श्रद्धा क्यों उत्पन्न हुई?

उत्तर: जब छोटे भाई को यह पता चला कि बड़े भाई ने उसकी देखभाल कितने अच्छे ढंग से की, उसके लिए कितनी कुर्बानियाँ दी हैं, अपनी सभी इच्छाओं पर नियंत्रण रखा ताकि छोटा भाई गुमराह न हो जाए, तब छोटे भाई को अपने भाई के बड़प्पन का अहसास हुआ। इससे छोटे भाई के मन में बड़े भाई के लिए श्रद्धा उत्पन्न हुई।

5. बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: बड़े भाई की स्वभावगत विशेषताएँ-

- * बड़े भाई में हर काम को नाप-तौल कर करने की आदत थी।
- * वे सभी नियम और कानून का पालन करते हैं।
- * छोटे भाई से सम्मान पाने की चाह उन्हें हमेशा रहती थी।
- * वे अपने छोटे भाई की तरक्की चाहते थे।
- * वे परिश्रमी और अध्ययनशील थे।
- * वे उपदेश देने की कला में माहिर थे।

कहीं-कहीं पर ऐसा लगता है जैसे वे अपनी उम्र से कुछ ज्यादा ही बड़े हैं। शायद छोटे भाई की जिम्मेदारी ने उनका बचपन छीन लिया था ।

6. बड़े भाई साहब ने ज़िंदगी के अनुभव और किताबी ज्ञान में से किसे और क्यों महत्वपूर्ण कहा है?

उत्तर: बड़े भाई साहब ने जिंदगी के अनुभव को किताबी को ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण माना है।

उनके अनुसार जीवन जीने की कला अनुभव से ही आती है । अनुभव की महता को सिद्ध करने के लिए उन्होंने अपनी माँ, दादा जी और हेड मास्टर साहब जी की बूढ़ी माँ का उदाहरण प्रस्तुत किया है । उनके अनुसार जो ज्ञान बड़ों को है वह पुस्तकें पढ़ कर हासिल नहीं होता है। गलत-सही, उचित-अनुचित की जानकारी अनुभवों से ही आती है। अतः जीवन के अनुभव किताबी ज्ञान से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए:

1. "इम्तिहान पास कर लेना कोई चीज नहीं, असल चीज है बुद्धि का विकास।"

उत्तर: यह कथन बड़ा भाई छोटे भाई के घमंड को तोड़ने के लिए कहता है। उनके अनुसार परीक्षा में पास होने का अर्थ यह नहीं है कि उसे जीवन की समझ आ गई है। वास्तव में असली चीज़ तो बुद्धि का विकास है । एक अच्छा और सच्चा इंसान बनने के लिए किताबी ज्ञान के साथ अनुभवी ज्ञान का होना आवश्यक है ।

बड़े भाई साहब फेल ज़रूर हो गए थे लेकिन जीवन की समझ उन्हें छोटे भाई से कहीं अधिक थी ।

2. "फिर भी जैसे मौत और विपत्ति के बीच भी आदमी मोह और माया के बंधन में जकड़ा रहता है, मैं फटकार और घुड़कियाँ खाकर भी खेलकूद का तिरस्कार नहीं कर पाता था।"

उत्तर: इस वाक्य में लेखक ने चरम उदाहरण का प्रयोग करके पाठक का पूरा ध्यान घटना पर केंद्रित करने की कोशिश की है।

लेखक के लिए बड़े भाई की डांट- फटकार सुनना मौत और विपत्ति की तरह हुआ करता था लेकिन जिस प्रकार मरते समय भी मनुष्य मौत और माया के बंधन नहीं तोड़ पाता है, उसी प्रकार छोटा भाई भी खेल-कूद का मोह नहीं छोड़ पाता था ।

यह पंक्ति लेखक की खेल-कूद के प्रति उनकी कमज़ोरी को उजागर करती है ।

3. "बुनियाद ही पुख्ता न हो, तो मकान कैसे पायेदार बने?"

उत्तर: बड़े भाई साहब को सही नींव डालने की चिंता हमेशा खाए रहती थी। इसलिए वे हमेशा ही हर विषय की गहराई में जाने की कोशिश करते थे। शायद इस कोशिश में वे ज्यादा ही उलझ जाते थे और मूल विषय को पकड़ नहीं पाते थे। फिर भी उनका कथन सोलह आने सही था। चाहे किसी मकान का निर्माण करना हो या आपके जीवन का, नींव हमेशा ही मजबूत होनी चाहिए क्योंकि मजबूत नींव पर की गई संरचना ज्यादा टिकाऊ होती है।

इस वाक्य में बड़े भाई साहब की शिक्षा पद्धति पर व्यंग्य किया गया है ।

4. "आँखें आसमान की ओर थीं और मन उस आकाशगामी पथिक की ओर, जो मंद गति से झूमता पतन की ओर चला जा रहा था, मानो कोई आत्मा स्वर्ग से निकलकर विरक्त मन से नए संस्कार ग्रहण करने जा रही हो।"

उत्तर: इन पंक्तियों में उस घटना का वर्णन है जब छोटा भाई कटी पतंग लूटने के लिए बेतहाशा भागता है।

कोई भी बच्चा जब पतंग लूटने के लिए भागता है तो उसकी आँखें अपलक आसमान की ओर होती हैं। जब कटी हुई पतंग दिशाहीन लहराती है और धीरे-धीरे जमीन की तरफ गिरती है तब डोर कट जाने से पतंग के सारे बंधन टूट जाते हैं। यह वैसा ही होता है जैसे आत्मा का शरीर से निकलने के बाद होता है। लेखक को ऐसा लगता है जैसे आत्मा स्वर्ग से निकलकर पूरी विरक्ति से नया जीवन ग्रहण करने जा रही हो और उसे अब अपने पिछले जीवन से कोई सरोकार नहीं है। पतंग भी इसी तरह से अपने नए मालिक की तरफ चली जाती है, इस बात से बेखबर कि हो सकता है नया मालिक फाड़कर उसका अस्तित्व ही मिटा दे।

लेखक प्रेमचंद जी ने इस मामूली-सी घटना को बड़े-ही रोचक ढंग से दर्शाया है ।
